LOK SABHA

Tuesday, November 23, 1965/Agrahayana 2, 1887 (Saka)

—

The Lok Sabha met at Eleven of the Clock.

[MR. SPEAKER *in the Chair*]

OBITUARY REFERENCE

Mr. Speaker: I have to inform the House of the sad demise of Shri Kirai Mushar who passed away at Murho, Distt. Saharsa, on the 18th August, 1965. He was a Member of the First Lok Sabha during the years 1953 to 1957.

We deeply mourn the loss of this friend and I am sure the House will join me in conveying our condolences to the bereaved family.

Any hon. Member wanting to speak. Dr. Lohia.

डा० राम मनोहर लोहिया (फर्रुखाबाद) : अध्यक्ष महोदय, एक हमउम्र और जानदार दोस्त की मौत पर कितनी यादें आती हैं और कितनी तकलीफें होती हैं । मैं इस सदन को केवल इतना ही बताऊं कि जब श्री किरई ऋषिदेव चुने गये थे तो पहली मर्तबे रेल के डिब्बे में अपनी जगह पर नहीं बैठे, फर्श पर बैठे । वह ऐसी जमात से आये थे । लेकिन फिर बाद में स्वाभिमान में बढ़ते गये, जानदारी में बढ़ते गये और मैं समझता हूं कि ऐसे जानदार समाजवादी, जिन को हम कहा करते हैं जन्मजात समाजवादी, बहुत कम देखने को मिले हैं । इसलिये मैं आपसे यह अर्ज करूं कि जहां भारत में और सब कमियां रही हैं, यह खुशी की बात रही है कि जो दबे हुए लोग हैं, हरिजन, आदिवासी , पिछड़े हुए, औरतें, उनमें पिछले अट्ठारह वर्षों में धीरे-धीरे कुछ निर्भीकता और कुछ स्वाभिमान जागा है ।

आखीर में मैं खाली एक अफसोस जाहिर कर दूं कि यह कदम अज वक्त मौत कुछ अभाव के कारण हुई जिसको हम लोग अपनी सीमित शक्ति के कारण दूर नहीं कर सके और एक बहुत जानदार दोस्त अपना चला गया ।

Mr. Speaker: The House may stand in silence for a short while to express its sorrow.

The hon. Members then stood in silence for a short while.

अध्यक्ष महोदय : एक बात मैं हाउस से कहना चाहता हूं । हमारे लिये, जैसा डाक्टर लोहिया ने कहा, वाकई सब बराबर हैं । जो भी मैम्बर हैं हम किसी में इम्तियाज नहीं करना चाहते ।

इस बारे में वाकई हमें खुशी है कि एक ऐसी जगह से और ऐसे स्टेट्स से एक आदमी आया और यहां आ कर अपनी जगह बनाई और ऐसा अच्छा काम किया । लेकिन यहां सवाल यह था कि जब उनकी मौत हुई थी तब हमें इत्तिला नहीं मिली और इतना वक्त गुजर गया । यहां स्पीकर जो करते हैं वह सिर्फ रिफरेंस इस लिये करते हैं कि इतना हो जाये कि हम खड़े हो कर अपना होमेज पे करें, और वह सबके लिये है जिसका इल्म हो जाये । हाउस के अन्दर सब बराबर हैं, कोई छोटा या बड़ा नहीं है इस हाउस में । मगर यह कोई ऐसा रेकार्ड भी नहीं है, कोई रजिस्टर आफ डैथ भी नहीं है कि हम यह रेकार्ड रखते हैं कि कौन मर गया । हमारा कम्युनिकेशन

भी नहीं है उनके साथ जो मैम्बर पहले रह चुके हैं और इस वक्त नहीं हैं। जब बहुत देर हो जाये तो कुदरती तौर पर पहली बात यह है कि अगर किसी मैम्बर साहब को पता चल जाये इसका और वह हमें इतला दे दें तो बड़ी मेहरबानी होगी क्योंकि हम उसी वक्त उसका रिफरैंस कर सकते हैं। मगर जब दो, तीन या चार महीने हो जायें तो इसके बारे में रिफरैंस कुछ अजीब सा मालूम होता है। कोशिश यह होनी चाहिये कि जब कभी किसी को ऐसी बात मालूम हो जाये तो वह इत्तला दे दिया करें ताकि रिफरैंस में इतनी देर न हुआ करे।

डा० राम मनोहर लोहिया : अध्यक्ष महोदय, मैं सफाई में कुछ कहना चाहता हूं। हमको खुद इत्तला बहुत देर में मिली नहीं तो वह फौरन आपको दे दी गई होती। आप इसी को देखिये कि उनका नाम ऋषिदेव था लेकिन उन को मुसहर कहा जाता है।

अध्यक्ष महोदय : जब इतनी देर हो जाये तो फिर जरूरी नहीं है कि रिफरेंस किया जाये। तीन या चार महीने के बाद यह अच्छा नहीं मालूम होता।

श्री रघुनाथ सिंह (वाराणसी): अध्यक्ष महोदय, मैं एक सुझाव देना चाहता हूं। आपकी तरफ से एक चिट्ठी हर एक डी० एम० को भेजी जाये कि अगर किसी एक्स-एम० पी० का देहान्त हो जाये उसके यहां तो वह फौरन् स्पीकर को इन्फार्म करे।

अध्यक्ष महोदय : इतने लोग हैं कांस्टिट्युएन्ट असेम्बली के और उसके पहले के हम कहां तक सबके लिये कह सकते हैं।

ORAL ANSWERS TO QUESTIONS

देहाती क्षेत्रों में ग्रामोद्योग

+
*386. **श्री मधु लिमये** :
श्री बागड़ी :

क्या सामाजिक सुरक्षा मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या सरकार गांवों के लोगों की आर्थिक दशा सुधारने के लिये देहाती क्षेत्रों में और उद्योग स्थापित करने का विचार कर रही है;

(ख) क्या सरकार गांवों में उद्योगों के विकास के लिये सभी सुविधायें प्रदान करने का भी विचार कर रही है; और

(ग) यदि हां, तो उसका ब्यौरा क्या है ?

The Deputy Minister in the Ministry of Law (Shri Jaganatha Rao): (a) Yes, Sir.

(b) and (c). The Government will provide financial, technical, training, marketing and common servicing facilities, etc.

श्री मधु लिमये : क्या सरकार ने हर एक राज्य के हर एक जिले के फी आदमी आमदनी के आंकड़े इकट्ठे किये हैं और क्या इन आंकड़ों से उसने यह अनुमान लगाया है कि फी आदमी आमदनी में जो इतना ज्यादा फर्क है उस का सबसे बड़ा कारण यह है कि दो सौ सालों से अंग्रेजों के जमाने से ले कर आज तक सारा पैसा लगाया जाता है कलकत्ता, बम्बई, मद्रास, दिल्ली जैसे बड़े शहरों में और ग्रामीण इलाकों के लिये कोई पर्याप्त इन्तजाम नहीं किया जा रहा है।

Shri Jaganatha Rao: It is true that there is a wide disparity between urban and rural incomes, but the establishment of industries in rural areas would depend upon the availability of land, water, power, nearness to the market—facilities of communication, etc.